



किताब पढने की दूआ

अज : शैबे तरीकत, अभीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते ईस्लामी, हजरते अद्वामा

मौलाना अबू बिलाव मुहम्मद ईल्यास अतार कादिरि रजवी **وَأَمَّا بِرَبِّكَهُمْ الْعَالِيَةِ**

दीनी किताब या ईस्लामी सबक पढने से पढले जैल में दी हुई दूआ पढ

लीजिये **إِنْ شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा. दूआ येह है :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

तर्जमा : ओ **अल्लाह** ! हम पर ईल्मी हिकमत के दरवाजे खोल दे और

हम पर अपनी रहमत नाज़िल करमा ! ओ अजमत और बुझुर्गी वाले !

नोट : अव्वल आबिर अेक - अेक बार दुइइ शरीफ़ पढ लीजिये.

तालिबे गमे मदीना

बकीअ

व मगदिरत



13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

कियामत के रोज़ हसरत

इरमाने मुस्तफ़ा **عَلَّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّمَ** : सब से ज़ियादा हसरत कियामत

के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में ईल्म हासिल करने का मौक़अ मिला मगर

उस ने हासिल न किया और उस शप्स को होगी जिस ने ईल्म हासिल किया

और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन उस ने न उठाया (या'नी

उस ईल्म पर अमल न किया)

(तारीख़ دمشق لابن عساکر، ج ٥١ ص ١٣٨ دار الفكر بیروت)

किताब के पारीदार मुतवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां प़राबी हो या सफ़हात कम हों या बाईन्डिंग में

आगे पीछे हो गअे हों तो मक्तबतुल मदीना से रुजूअ करमाईये.



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ إِنَّمَا بَعُدَ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ ط

“गरीब झाअटे में हे” का गुजराती रस्मुल ખત

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते ईस्लामी की मजलिस “अल मदीनतुल ईल्मिय्या” ने येह रिसाला ‘ઉદ્દૂ’ ઝબાન મેં પેશ ક્રિયા હૈ ઓર મજલિસે તરાજિમ ને ઈસ રિસાલે કા ‘ગુજરાતી’ રસ્મુલ ખત (લીપિયાંતર) કરને કી સઆદત હાસિલ કી હૈ [ભાષાંતર (Translation) નહીં બલકિ સિર્ફ લીપિયાંતર (Transliteration) યા’ની બોલી તો ઉદ્દૂ હી હૈ જબ કિ લીપિ (લિખાઈ) ગુજરાતી કી ગઈ હૈ] ઓર મક્તબતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા હૈ.

ઈસ રિસાલે મેં અગર કિસી જગહ કમી-બેશી યા ગલતી પાએં તો મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીઅએ Sms, E-mail યા Whats App બ શુમૂલ સફહા વ સતર નમ્બર) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

ઉદ્દૂ સે ગુજરાતી રસ્મુલ ખત કા લીપિયાંતર ખાકા

થ = تھ	ت = ت	ફ = ف	پ = پ	ભ = ب	બ = ب	અ = ا
ઇ = ج	ચ = ج	ઝ = ج	જ = ج	સ = ث	ઠ = ث	ટ = ٹ
ઝ = ذ	ઢ = ذ	ડ = ذ	ધ = دھ	દ = د	ખ = خ	હ = ح
શ = ش	સ = س	ઝ = ژ	ઝ = ز	ઢ = ذ	ડ = ذ	ર = ر
ફ = ف	ગ = غ	અ = ع	ઝ = ظ	ત = ط	ઝ = ض	સ = ص
મ = م	લ = ل	ઘ = گ	ગ = گ	ખ = کھ	ક = ک	ક = ق
ا = ا	و = و	آ = آ	ی = ی	ہ = ہ	و = و	ن = ن

-: રાબિતા :-

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

મદની મર્કઝ, કાસિમ હાલા મસ્જિદ, સેકન્ડ ફ્લોર, નાગર વાડા મેન રોડ,
બરોડા, ગુજરાત, અલ હિન્દ, Mo. 09327776311

E-mail : translation.baroda@dawateislami.net

પેશકશ : મજલિસે અલ મદીનતુલ ઈલ્મિયા (દા'વતે ઈસ્લામી)



الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ



गरीब झांछे में हे

शैतान लाभ सुस्ती दिलाअे येड रिसाला अक्वव ता आभिर मुकम्मल पढ लीजिये. **إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ** सवाब के भजानअे ला जवाब के साथ साथ गुरबत के इजाईलो भरकात की मा'लूमात ली हासिल डोंगी. ❦

❦ दुइहे पाक की इमीलत ❦

सहाबिये मुस्तफ़ा हजरते सय्यिहुना ज़ाबिर **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** के वालिदे गिरामी हजरते सय्यिहुना समुरह सुवाई **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ** रिवायत इरमाते हैं कि हम सरकारे आली वकार **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के दरबारे गुडरबार में हाज़िर थे कि अेक शप्स हाज़िर हो कर अर्ज़ गुज़ार हुवा : या रसूलव्लाह **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ !** **अल्लाह** की बारगाह में सभ से अख़ा अमल कौन सा है ? तो मडबूबे भुदा, सरवरे अम्बिया **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने ईशाद इरमाया : “सय बोलना और अमानत अदा करना.” (राविये हदीस हजरते सय्यिहुना समुरह **رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ**

इरमाने मुस्ताफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ : मुज पर दुरदे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे लिये पाकीजगी का बाईस है. (अबुल्लै)

इरमाते हैं) मैं ने अर्ज की : या रसूलल्लाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّمَ ! मजीद कुछ ईशाई इरमाईये ! इरमाया : “कसरते जिक और मुज पर दुरदे पाक पढना कि येह अमल इक (या'नी गुरबत) को दूर करता है.”

(القول البديع، الباب الثاني في ثواب الصلاة على رسول الله... الخ، ص ٢٧٢ مختصراً)

अहरे रकअे मरओ जइमतो रन्जो कुल्लत हूँउते किरते हैं वोह लोग कहां का ता'वीज तुम पढो साहिबे लौलाक पर कसरत से दुरद है अजब दई निहां और अमां का ता'वीज

शेरे पुदा की कनाअत

उजरते सय्यिहुना सुवैद बिन गइला رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ इरमाते हैं कि मैं अभीरुल मुअमिनीन उजरते मौलाअे काअेनात, अलिय्युल मुर्तजा शेरे पुदा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيمِ की षिदमते सरापा अजमत में दारुल अमारत कूझा में छाजिर हुवा. आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيمِ के सामने जव शरीफ़ की रोटी और दूध का अेक पियाला रभा हुवा था, रोटी षुशक और ईस कदर सप्त थी कि कल्मी अपने हाथों से और कल्मी घुटने पर रभ कर तोउते थे. येह देभ कर मैं ने आप كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيمِ की कनीज किऊजा शेरे पुदा से कहा : आप को ईन पर तर्स नही आता ? देभिये तो सही रोटी पर लूसी लगी हुई है ईन के लिये जव शरीफ़ छान कर नर्म रोटी पकाया करें. ताकि तोउने में मशककत न हो. किऊजा رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهَا ने जवाब दिया : अभीरुल मुअमिनीन كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰی وَجْهَهُ الْكَرِيمِ ने हम से अइद लिया है कि ईन के लिये कल्मी ली जव शरीफ़ छान कर न पकाया



इरमाने मुस्ताफा صَلَّي اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुरहे पाक पढा **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर एस रहमतें भेजता है. (सुलम)

जाओ. एतने में अमीरुल मुअमिनीन **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ** मेरी तरफ़ मुतवज्जेह हुवे और इरमाया : ओ एंने गइला ! आप एस कनीज से क्या इरमा रहे हैं ? मैं ने जो कुछ कछा था अर्ज कर दिया और इख्तिया की : या अमीरल मुअमिनीन ! आप अपनी जान पर रहम इरमाएये और एतनी मशककत न उठाएये. तो आप **كَرَّمَ اللهُ تَعَالَى وَجْهَهُ الْكَرِيمُ** ने इरमाया : ओ एंने गइला ! दो आलम के मालिको मुप्तार, मक्की मदनी सरकार, महबूबे परवर दगार **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** और आप के अहलो एयाल ने कभी तीन दिन बराबर गेहूं की रोटी शिकम सैर हो कर नहीं भाई और न ही कभी आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के लिये आटा छान कर पकाया गया. अक दइआ मदीनअे मुनव्वरह **شَرَفًا وَتَعْظِيمًا** में भूक ने बहुत सताया तो मैं मजदूरी के लिये निकला, देखा कि अक औरत मिट्टी के ढेलों को जम्भ कर के उन को बिगोना खाइती थी मैं ने उस से ई डोल अक भजूर उजरत तै की और सोलह डोल डाल कर उस मिट्टी को बिगो दिया यहां तक कि मेरे हाथों में छाले पड गअे इर वोह भजूरें ले कर मैं हुजूरे अकरम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मुह्तशम, शाइअे उमम **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** के हुजूर छाजिर हुवा और सारा वाकिआ बयान किया तो आप **صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** ने त्नी उन में से कुछ भजूरें तनावुल इरमाई.

(369. 1, स. जि. सुन्त, इंजाने सुन्त, تذكرة الخواص، الباب الخامس، ص 112)

अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी मज्फिरत हो.

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

इरमाने मुस्ताडा عَلَىٰ شَيْئَاتٍ عَلَيْهِمْ سَلَامٌ : जे मुज पर दस भरतबा दुइदे पाक पडे **अल्लाह** عَلَىٰ عَزَّ وَجَلَّ इस पर सो रडमते नाजिब इरमाता है. (बुरान)

❁ दिव को नर्म करने का गुरबा ❁

भीठे भीठे ईस्वामी भाईयो ! अभीरुल मुअमिनीन उजरते मौलाअे काअेनात, अलिय्युल मुर्तजा शेरे भुदा **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَىٰ وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** की सादगी पर उमारी ज्ञान कुरबान छे. ईतनी ईतनी मशककतें भरदाशत करने के बा वुजूद जबान पर कबी उई शिकायत न लाते. गिजा के साथ साथ आप का लिबास भी ईन्तिछाई सादा हुवा करता था. अेक बार आप **كَرَّمَ اللَّهُ تَعَالَىٰ وَجْهَهُ الْكَرِيمِ** की भिदमत में अर्ज की गई, आप अपनी कमीस में पैवन्ध क्यूं लगाते हैं ? इरमाया : **يَخْشَعُ الْقَلْبُ وَ يَقْتَدِي بِهِ الْمُؤْمِنُ** या'नी ईस से दिव में भुशूअ पैदा छेता है और ईस से लोग बन्धअे मोमिन की ईकितदा करते हैं. (हलीة الاولياء، على بن ابي طالب، ١/١٢٤، رقم: ٢٥٤)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَى مُحَمَّدٍ

भीठे भीठे ईस्वामी भाईयो ! गुरबत **अल्लाह** عَلَىٰ عَزَّ وَجَلَّ की ने'मत, नबिय्ये रडमत **صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ** की याउत, अहुत सारी इजीलत और बे शुमार इवाईद का पेश-भैमा है, ईसी वजह से अल्लाह वालों ने गुरबत को पसन्ध इरमाया जैसा कि

❁ गुरबत के इवाईद ❁

उजरते सय्यिदुना ईब्राहीम बिन अशशार **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّارِ** इरमाते हैं : मैं उजरते सय्यिदुना ईब्राहीम बिन अदहम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَمِ** के उमराह सइर पर था और उम दोनों रोजे से थे, मगर उमारे पास ईइतार के लिये कुछ न था और न ही कोई अैसे जाडिरी अरबाअ नजर



इरमाने मुस्ताफा ﷺ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरुद पढो कि तुम्हारा दुरुद मुज तक पहुंचता है. (طبرانی)

आ रहे थे कि जिन से ईफ्तारी का ईन्तिजाम किया जा सके. मेरी ईस इक को ट्रेष कर डरते सय्यिदुना ईब्राहीम बिन अदहम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** ने ईशाद इरमाया : “अै ईबने अशशार (عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْغَفَّار) ! **अल्लाह** ने गरीबों और मिसकीनों को दुन्या व आबिरत में किस कदर ने’मतों और राहतों से सरइराज इरमाया है बरोजे कियामत न ईन से जकत के बारे में पूछा जाओगा और न डज व सदका और सिलअे रेड्भी व हुस्ने सुलूक के बारे में हिसाबो किताब डोगा, जब कि मालदारों से ईन सब चीजों के बारे में सुवाल डोगा. दुन्या के येड अमीर व सरमाया दार आबिरत में गरीब व नादार और मडूज दुन्यवी ईज्जत दार वहां जलीलो ज्वार डोंगे, आप इक न कीजिये, **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** रोजी का जामिन है वोड तुम्हारे लिये रिज्क का ईन्तिजाम इरमाओगा, डम ईन दुन्यावी अमीरों से जियादा अमीर हैं. दुन्या व आबिरत में कामिल मसरत डमें डासिल है न रन्जे गम है और न ईस की परवाल कि डमारी सुब्ड कैसे हुई और शाम कैसे ? अस शर्त येड है कि **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** की ईताअत व इरमां बरदारी के मुआमले में कोताडी आडे न आने दें.” येड इरमा कर आप **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى** नमाज में मशगूल डो गअे और मैं ने भी नमाज शुइअ कर दी. थोडी डी डेर बा’द अेक शप्स डमारे पास 8 रोटियां और बडुत सी अजूरें ले कर आया और येड कड कर वापस यला गया कि आईये ! **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** तुम पर रड्म इरमाअे. डरते सय्यिदुना ईब्राहीम बिन अदहम **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم** ने मुज से इरमाया : “लीजिये और आईये.” जूं डी डम पाना पाने लगे, अेक साईल ने सदा लगाई कि **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** के नाम पर मुजे

इरमाने मुस्ताफा ﷺ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरहे पाक न पढ़ा तलकीक वोह बढ भन्त हो गया. (उरुः)

कुछ जाना दे दीजिये. उजरते सय्यिदुना एब्राहीम बिन अदहम
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْأَكْرَم ने तीन रोटियां और कुछ भजूरें उस हाजत मन्द को दे
 दीं और इरमाया : “गम भवारी करना अहले इमान का हिस्सा है.”

(روض الريحان، ص 272)

अल्लाह रब्बुल एज्जल एज़्ज़ की उन पर रहमत हो और उन
 के सटके हमारी बे हिसाब भगि़रत हो. **اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاٰلِهِ وَسَلَّمَ**
 मानिन्टे शम्भ तेरी तरफ लौ लगी रहे हे लुक् भेरी जं को सोजो गुदाज का
 क्युंकर न भेरे काम भनें गैब से हसन भन्दा भी हूं तो कैसे भउे कारसाज का
 (जौके ना'त)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدًا

गुरबा व कुकरा 500 साल पहले जन्मत में

भीठे भीठे इस्लामी भाईयो ! मजकूरा वाकिअे से पता चलता कि
 इको गुरबत बाईसे सआदत है न कि बाईसे आफत. गरीबों भिस्कीनों
 के आभिरत में मजे होंगे कि माली एबादात जैसे जकत, फ़ित्रा, उज
 वगैरा के मुतअद्लिक पूछगछ से मामून (या'नी अम्न में) होंगे क्युं कि
 येह अहकाम मालदार व साहिबे इस्तिताअत मुसलमानों के लिये हैं.
 बरोजे महशर जब कि मालदार बारगाहे रब्बे जुल जलाल **عَزَّ وَجَلَّ** में
 अपने माल के मुतअद्लिक हिसाब किताब देने में मशगूल होंगे, एधर
 नादार मुसलमान **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** की रहमत व भशियत से दाभिले
 जन्मत हो रहे होंगे और यूं जन्मत में इकीरों, गरीबों का दाभिला
 अमीरों से पहले होगी जैसा कि उजरते सय्यिदुना अबू हुरैरा



इरमाने मुसलम عَلَيْهِ السَّلَامُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : तुम जहां भी हो मुज पर दुरुद पढो कि तुम्हारा दुरुद मुज तक पहुंचता है. (परान)

رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रउकुर्हीम वल्लिहू अल्लैहि सलाम का इरमाने दिल नशीन है : “मुसलमान कुकरा अगिनया से आधा दिन पडले जन्त में दाखिल हो जाअेंगे और वोड (आधा दिन) 500 साल (के बराबर) डोगा.”

(ترمذی، کتاب الزهد، باب ما جاء ان فقراء المهاجرين الخ، ٤/١٥٨، حدیث: ٢٣٦١)

डकीमुल उम्मत डजरते मुफ्ती अडमद यार ખान नईमी गरीबों के अमीरों से पांय सो साल पडले जन्त में दाखिले की वजाहत करते डुवे इरमाते हैं : ખयाल रहे कि येड डेर डिसाब की वजह से न डोगी रब तआला सारे आलम का डिसाब भडुत जल्ले वेगा येड उन कुकरा की शान डिखाने के लिये डोगी कि अमीरों को डिसाब के नाम पर रोक लिया गया और इकीरों को जन्त की तरफ यलता कर डिया गया. मुफ्ती साडिब رَحِمَهُ اللهُ عَلَيْهِ पांय सो साल की वजाहत करते डुवे इरमाते हैं : या'नी डियामत का दिन अेक डजार बरस का है, रब तआला इरमाता है : **(तर्जमअे कन्जुल ईमान :** إِنَّ يَوْمًا عِنْدَ رَبِّكَ كَأَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّونَ ۝) बेशक तुम्हारे रब के यडं अेक दिन अैसा है जैसे तुम डोगों की गिनती में डजार बरस (११७५: الحج: ६१) डं बा'ज को पयास डजार साल का मडसूस डोगा, इन के मुतअद्लिक रब इरमाता है : **(तर्जमअे कन्जुल ईमान :** वोड अजाब उस दिन डोगा जिस की मिकदार पयास डजार बरस है. (११७५: الحج: ६१)) और बा'ज मुअमिनीन को घडी त्बर का मडसूस डोगा, रब तआला इरमाता है : **(तर्जमअे कन्जुल ईमान :** तो वोड قَدْ لِكَ يَوْمٍ يَوْمٍ يَوْمٍ عَسِيرٍ ۝ عَلَى الْكٰفِرِينَ عَذَابٌ شَدِيدٌ ۝)

इरमाने मुस्ताफा عليه السلام : जिस ने मुज पर सुबह व शाम दस दस बार दुरदे पाक पढा उसे कियामत के दिन मेरी शकाअत मिलेगी. (मिर्जाह)

दिन करी (सप्त) दिन है. काफ़िरों पर आसान नहीं). लिहाजा आयात में तआरुज नहीं और हो सकता है कि कियामत का दिन पयास हज़ार साल का हो मगर बा'ज को अेक हज़ार साल का मडसूस हो, बा'ज को ँस से भी कम उता कि अबरार (नेकूकारों) को अेक साअत का मडसूस होगा जैसे अेक ही रात आराम वाले को छोटी मडसूस छोती है तक्लीफ़ वाले को भडी. (मिरआतुल मनाज्जिह, जि. 7, स. 67 अ तसरुफ़)

अजाबे क़ब्रों मडशर से बया लो नारे दोज़्प से
पुढारा साथ ले के जाओ जन्त या रसूलव्लाह !

(वसाँले बप्शिश)

✪ गुरबत पर सध ✪

मीठे मीठे ईस्वामी भाईयो ! येह सध इजाँल उस गरीब मुसलमान के लिये हैं जो अपनी गुरबत पर सध करे. हर वक्त जम्मे माल के यक्कर में पडा रहने वाला, अभीरों और उन की ने'मतों को टेप टेप कर दिव जलाने या हसद की आइत में मुब्तला होने वाला मुफ़लिसो नादार जो अपनी गुरबत पर साबिर नहीं वोह बयान कर्दा ईन्आम का मुस्तहिक नहीं और अगर बढ डिस्मती से बे सध्री में मजीद आगे बढ गया तो फिर जिल्लतो रुस्वाँ मुकदर बन सकती है. पस ! नादारों और मुसीबत के मारों को भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की पुफ़या तदबीर से डरते रहना ज़रूरी है क्यूं कि हो सकता है ईन आइतों के जरीअे आजमाँश में डाला गया हो और गिला शिक्वा, बे सध्री और गुरबत व मुसीबत



इरमाने मुस्ताफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : जे लोग अपनी मजबिस से अल्वाह के जिक और नबी पर दुइद शरीफ़ पढे बिगैर उक गये तो वोह बढबुदार मुदरि से उके. (شعب الایمان)

को हराम ठरायेअ से अत्म करने की कोशिशें आभिरत में तबाही व बरबाही का सबब बन जायें.

उठरते सय्यिदुना एमाम मुहदिस एब्ने जौजी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं : “भोहताज् अक मरज की मानिन्द है जे एस में मुभतला हुवा और सभ्र किया वोह एस का अज्जो सवाब पायेगा, एसी लिये भोहताज व गरीब लोग जिन्हों ने अपने इक व गुरबत पर सभ्र किया डोगा, अभीरों से 500 साल पहले जन्त में द्वाबिल हो जायेंगे.”

रहें सभ शाह घर वाले शहा थोड़ी सी रोजी पर
अता हो दौलते सभ्रो कनाअत या रसूलव्वाह !

(वसाएले बज्शिश)

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

❧ क्या मालदार गरीबों से अमल में सभकत रजते हैं ? ❧

उठरते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ से मरवी है कि “मुहाजिरीन हुकरा, बारगाडे रिसालत صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ में हाजिर हुवे और अर्ज किया : या रसूलव्वाह صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मालदार लोग बुलन्द मरातिब और अबदी ने'मते ले गये.” सरकार मुहदिस ने इरमाया : वोह कैसे ? तो उन्हों ने अर्ज की : वोह हमारी तरह नमाज पढते हैं और हमारी तरह रोजे भी रजते हैं, वोह सद्का करते हैं हम सद्का नहीं कर सकते, वोह गरदनें छुडाते (या'नी गुलाम आजाद करते) हैं, हम गरदनें नहीं छुडा सकते. तो सरकारे आली वकार, गरीबों के गम गुसार صَلَّی اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने एशदि इरमाया : “क्या मैं तुम्हें ऐसी चीज न सिखा दूं, जिस के जरीये

इरमाने मुस्ताफ़ा صَلَّيَ اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढेगा में कियामत के दिन उस की शफ़ाअत करूंगा. (جمع الجوامع)

तुम उन लोगों के साथ मिल जाओ जो तुम से आगे हैं और उन पर सबकत ले जाओ जो तुम से पीछे हैं? और कोई भी तुम से अफ़जल न हो सिवाये उस शप्स के जो तुम्हारी तरफ़ अमल करे.” सहाबअे किराम صَلَّيَ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने अर्ज़ किया : “या रसूलल्लाह (سُبْحَانَ اللهِ) तद्भीद (الْحَمْدُ لِلَّهِ) और तकबीर (الله أكبر) पढा करो.” (مسلم، كتاب المساجد، باب استحباب ذكر بعد الصلاة، ص ۳۰۰، حديث: ۵۹۵)

मैं बेकार भातों से बच के डभेशा

करूं तेरी उम्हो सना या धलाडी

(वसाधले बप्शिश)

❁ गरीब व मिस्कीन पलीफ़ा ❁

दा'वते ईस्वामी के ईशाअती धंदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 590 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब “उजरते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज की 425 छिकायात” के सफ़हा 187 पर है : अमीरुल मुअमिनीन उजरते सय्यिदुना उमर बिन अब्दुल अजीज عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْعَزِيزِ की बिदमत में धंद से अेक दिन कबल आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى की शहजादियां डालिर हुधं और बोलीं : “बाबाजान ! कल धंद के दिन डम कौन से कपडे पहनेगी ?” इरमाया : “येडी कपडे जो तुम ने पहन रभे हैं, धन्डें धो लो, कल पहन लेना !”, “नहीं ! बाबाजान ! आप डमें नअे कपडे बनवा दीजिये,” बख़ियों ने जिद करते हुवे कडा. आप عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ تَعَالَى ने इरमाया : “मेरी बख़ियो ! धंद का दिन **अल्लाहु** रब्बुल धज़्ज़त की धबादत करने, उस का शुक्र बज्ज लाने का दिन है, नअे कपडे

पेशकश : मजबिसे अल मदीनतुल धल्मिया (दा'वते ईस्वामी)



इरमाने मुस्ताफ़ा : صَلَّوْا عَلَيَّ فِي يَوْمَيْكُمْ : जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरडे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआक होंगे. (جمع الجوامع)

पहनना ज़रूरी तो नहीं !”, “**बाबाजान !** आप का इरमाना बेशक दुरुस्त है लेकिन हमारी सहेलियां हमें ता’ने देंगी कि तुम अभीरुल मुअमिनीन की लडकियां हो और ईद के रोज़ भी वोही पुराने कपडे पहन रहे हैं !” येह कहते हुवे बख़ियों की आंभों में आंसू भर आये. बख़ियों की बातें सुन कर आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ का दिल भी भर आया. आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने **फ़ाज़िन** (वज़ीरे मालियात) को बुला कर इरमाया : “मुझे मेरी अेक माह की तन-ज्वाह पेशगी ला दो.” “**फ़ाज़िन** ने अर्ज़ की : **हुज़ूर !** क्या आप को यकीन है कि आप अेक माह तक जिन्दा रहेंगे ?” आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरमाया : “**جَزَاكَ اللَّهُ** तू ने बेशक उम्दा और सहीह बात कही.” **फ़ाज़िन** यला गया. आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बख़ियों से इरमाया : “**प्यारी** बेटियो ! **अल्लाह** व रसूल **उम्दा** और सहीह बात कही. **फ़ाज़िन** यला गया. आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने बख़ियों से इरमाया : “**प्यारी** बेटियो ! **अल्लाह** व रसूल **उम्दा** और सहीह बात कही.” (मा’दने अज्वाक, हिस्सअे अज्वल, स. 257)

अल्लाह रब्बुल ईज़्जत **عَزَّ وَجَلَّ** की उन पर रहमत हो और उन के सढके हमारी बे हिसाब भगि़रत हो.

أُمِّينَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْأَمِينِ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! हमें भी अपने अस्लाफ़े किराम **रज्ज़ुल मुअमिनीन** के नकशे कदम पर चलते हुवे तंग दस्तियों, मोहताजियों और धरेलू परेशानियों से धबरा कर गिला शिकवा करने के बज्जअे हमेशा **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** की बारगाह में रुजूअ करना याहिये और उस की रिज़ा पर राज़ी रहना याहिये और हुआ की कसरत करनी याहिये जैसा कि

इरमाने मुस्ताफ़ा صَلَّاتُ اللَّهِ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुइदे पाक न पढ़ा (उस ने जन्नत का रास्ता छोड़ दिया. (ज़ुंज़ु))

परेशान हाल की हुआ

अक़ बुज़ुर्ग़ رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ की भिद्यमत में अक़ शप्स ने अर्ज़ की : हुज़ूर ! अहलो र्थयाल की झिक्र ने मुझे परेशान कर रप्पा है. मेरे डक में हुआ इरमांरथे. जवाब दिया : “तेरे अहलो र्थयाल जब तुज से आटा और रोटी न होने की शिकायत करें तो उस वक्त **अल्लाह** तभा-र-क व तआला से हुआ किया कर कि तेरी उस वक्त की हुआ कबूलिय्यत के जियादा करीब है.” (روض الرّیاحین، ص ۲۵)

मीठे मीठे र्थस्वामी भांरथो ! जिस की तंगदस्ती उइरु पर डोगी यकीनन वोड बेहद दुष्मी और गमगीन डोगा और दुष्प्यारों की हुआ कबूल डोती है जैसा कि दा'वते र्थस्वामी के र्थशाअती र्थदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ किताबे मुस्तताब “इजांरले हुआ” में आ'ला डउरत के वालिदे मेडरबान र्थसुल मुतकदिलमीन डउरते अद्वामा मौलाना नकी अली पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْمَنَّان ने मुस्तज्जुदा'वात शप्सियात (या'नी जिन डोगों की हुआओं कबूल डोती हैं उन) में सब से पहले नम्बर पर लिखा है, “अव्वल : मुज़तर (या'नी बेयैन व परेशान डाल).”

र्थस की शर्ह में सरकारे आ'ला डउरत, र्थमामे अहले सुन्नत मौलाना शाड र्थमाम अहमद रज़ा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَن इरमाते हैं : र्थस (या'नी दुष्प्यारे और लायार की हुआ की कबूलिय्यत) की तरइ तो पुद कुरआने अजीम में र्थशारा मौजूद :



इरमाने मुस्ताफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मफ़िरत है. (ابن عساکر)

أَمَّنْ يُجِيبُ الْمُضْطَرَّ إِذَا دَعَاهُ तर्जमअे क-जुल ईमान : या वोड ज़ो
وَيَكْشِفُ السُّوءَ (پ ۲۰، النمل: ۶۲) लायार की सुनता है, जब उसे पुकारे और
दूर कर देता है बुराई.

(इजायले हुआ, स. 218)

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! जुदा **عَزَّ وَجَلَّ** की कसम ! दुन्या की रंगीनियों में गुम मालदार व साहिबे ईकितदार के मुकाबले में सुन्नतों का पाबन्द गरीब व नादार जुश नसीब व भप्त बेदार है और वोड आभिरत में कामयाब है ज़ो गुरबत, अमराज व आफ़ात में मुब्तला होने के बा वुजूद **अल्लाहु** गरुफ़ार **عَزَّ وَجَلَّ** और उस के रसूले ज़ी वकार **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ** का ईताअत गुजार है.

जबां पर शिक्वअे रन्जो अलम लाया नही करते
नबी के नाम लेवा गम से घबराया नही करते
صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

❧ मिस्कीनों के लिये जन्नत ❧

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! वोड मुसलमान ज़ो आज अडले दुन्या की नजर में डकीर तसव्वुर किये जाते हैं, गरीब समज कर डकअे अडबाब से दूर कर दिये जाते हैं, डिल्लते माल के सभब मुंड नही लगाअे जाते, लेकिन कुरबान जाईये **अल्लाहु** रब्बुल ईज्जत **عَزَّ وَجَلَّ** की रहमत पर कि येही लोग जन्नत के लिये भाईसे ईज्जत व अजमत हैं जैसा कि डजरते सय्यिदुना अबू डुरैरा **رَضِيَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْہُ** रिवायत करते हैं कि गरीबों के मल्ला व मावा, अडमटे मुजतबा, मुडम्मटे मुस्तफ़ा **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ** का इरमाने वाला शान है : “जडन्नम और जन्नत में मुबाडसा हुवा तो जडन्नम ने कडा : “मुजे जालिम और मुतकब्बिर लोगों के साथ इजीलत दी गई है.” जन्नत ने कडा : “मुजे



इरमाने मुस्ताफ़ा صَلَّيْ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइटे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुज पर दुइटे पाक पढ़ेना तुम्हारे बिचे पाकीजगी का भाईस है. (अब्रहिल)

क्या हुवा कि मुज में सिर्फ़ कमजोर व लायार और आजिज लोग दाबिल होंगे.” तो **अल्लाह** तबारक व तआला ने जन्नत से इरमाया : “अै जन्नत ! तू मेरी रहमत है, मैं अपने बन्दों में से जिस पर याहूंगा तेरे जरीअे रहम इरमाओंगा.” और दोजभ से इरमाया : “अै जहन्नम ! तू मेरा अजाब है मैं अपने बन्दों में से जिसे याहूंगा तेरे जरीअे अजाब हूंगा.” (مسلم، كتاب الجنة، باب النار يدخلها الجبارون الخ، ص ١٠٢٤، حديث: ٢٨٤٦، مختصراً)

उजरते सय्यिहुना अल्लामा अली बिन सुल्तान मुहम्मद कारी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْبَارِي करते हुवे इरमाते हैं : “यहां कमजोरों से मुराद वोह मुसलमान हैं जो माली और जिस्मानी तौर पर कमजोर हैं.”

(مرقاة المفاتيح، كتاب الفتن، باب خلق الجنة و النار، ٦٦٢/٩، تحت الحديث: ٥٦٩٤)

ताज्रो तप्तो हुकूमत मत दे, कसरते मालो दौलत मत दे
अपनी रिजा का दे दे मुज्हा, या **अल्लाह** मेरी ओली तर दे
(वसाईले बज्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

अक्सर जन्नती गरीब होंगे

मीठे मीठे ईस्वामी भाईयो ! जिक कर्दा रिवायते जीशान गरीबों और मोहताजों के लिये किस कदर ढारस निशान है कि **अल्लाह** गुरबा व मसाकीन पर रहम इरमाते हुवे उन्हें जन्नत अता इरमाओगा और जन्नत पाने वाले अक्सर वोह फुश नसीब मुसलमान होंगे जो हुन्या में इको इका और गुरबत की जिन्दगी बसर करते रहे होंगे जैसा कि उजरते सय्यिहुना अब्दुल्लाह बिन अम्र صَلَّيْ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ عَنْهُ से रिवायत है कि सरदारे मककअे मुकर्रमा, सुल्ताने मदीनअे मुनव्वरह صَلَّيْ اللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने जन्नत निशान है :



इरमाने मुस्ताफा صلى الله عليه وسلم : जिस ने किताब में मुज पर दुरदे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये ईस्तिस्कार (या'नी बफिशश की दूआ) करते रहेंगे. (طبرانی)

“یا'नी मैं ने जब जन्मत को मुलाहजा किया तो देखा कि जन्मतियों में अकसर ता'दाद हुकरा (या'नी गरीब लोगो) की है.” (مسند احمد، مسند عبد الله بن عباس، ٤/١، ٤٠٤، حديث: ٢٠٨٦)

दे हुस्ने अप्लाक की दौलत, कर दे अता ईप्लास की ने'मत
मुज को भजाना दे तक्वा का, या **अल्लाह** मेरी जोवी भर दे

(वसाईले बफिशश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

दुआये नबिय्ये रहमत और मसाकीन से महब्बत

मीठे मीठे ईस्लामी भाईयो ! गुरबत व भिस्कीनी तो वोह आजमाईश है जिस में मुभ्तला मुसलमान अगर सभ्र का दामन थामे हुवे गौरो झिं करे तो उसे पता चलेगा कि अहादीसे मुबारका में गुरबा व मसाकीन के कितने झंझाईल बयान किये गये हैं, ईस्लाम में ऐसे लोग हकीर नहीं बल्कि लाईके महब्बत हैं, जैसा कि हजरते सय्यिदुना अबू सईद जुदरी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं : मसाकीन से महब्बत करो, क्यूं कि मैं ने रसूले जुदा, महबूबे अम्बिया صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को दूआ में येह अह्फाज शामिल इरमाते सुना :
“أَللَّهُمَّ أَحْيِيْ سَكِيْنَا وَأَمِيْتِيْ سَكِيْنَا وَأَحْشُرِيْ فِيْ زُمْرَةِ الْمَسَاكِيْنِ” या'नी **अल्लाह** मुझे भिस्कीनी की डालत में उयात और भिस्कीनी की डालत में डी विसाल अता इरमा और गुरौडे मसाकीन में मेरा उशर इरमा.”

(ابن ماجه، كتاب الزهد، باب مجالسة الفقراء، ٤/٤٣٣، حديث: ٤١٢٦) शरई मस्अला : याद रभिये कि जुजूर صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ बारगाडे ईलाही में ईजज के तौर पर अपने आप को जुमरअे मसाकीन में शामिल इरमाओं तो येह आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को रवा (या'नी ज़ाईज) है लेकिन हमारे लिये आप صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ को “इकीर व भिस्कीन” कलना ना रवा (या'नी ज़ाईज नहीं) बल्कि हराम है. (इतावा अडले सुन्नत, हिस्सा: 8, स. 118)

इरमाने मुस्ताफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक् हुआ और उस ने मुज पर दुइद शरीक न पढा उस ने जका की. (عبدالرزاق)

भीठे भीठे ईस्वामी त्माईयो ! गुरबत व मिसकीनी अपने जिलौ (या'नी मईय्यत) में कितनी बरकतें लिये हुवे है कि शहनशाहे फुश भिसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ भी गुरौछे मसाकीन में शामिल होने और ईसी गुरौछ को अपनी रफ़ाकत की बरकतों से नवाजने की ज्वालिश और इन से महबूबत की तल्कीन इरमा रहे हैं.

सलाम उस पर कि जिस के घर में यांटी थी न सोना था

सलाम उस पर कि टूटा बोरिया जिस का बिछौना था

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

❁ कुकरा से महबूबत कुर्बते ईलाही का सबज ❁

उररते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُ रिवायत करते हैं कि महबूबे रब्बुल ईज़्जत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ ने उररते सय्यिदुना आईशा सिदीका رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को मुजातब कर के ईशाई इरमाया : “ يَا عَائِشَةُ اِحْبِي الْمَسْكِيْنَ وَقَرِّيْہُمْ فَإِنَّ اللہَ يَقْرُبُكَ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ” आईशा (رَضِيَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا) ! मिसकीनों से महबूबत करो, उन्हें अपने करीब रजो ताकि बरोजे कियामत **अल्लाह** तआला तुमहें अपने कुर्ब से नवाजे.”

(مشكاة المصابيح، كتاب الرقاق، باب فضل الفقراء الخ، الفصل الثاني، ٢٥٥/١، حديث: ٥٢٤٤، مختصراً)

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَی مُحَمَّد

❁ हकीकी मुइलस डौन ? ❁

भीठे भीठे ईस्वामी त्माईयो ! दुन्यवी मालो उर की मोहताज उफ़रवी ने'मतें पाने का सबज है बशर्ते कि सभ्र का दामन हाथ से न छूटे. लिहाजा ईस डालत से परेशान डों न तश्वीश में मुतला डों.



इरमाने मुस्ताफ़ा صلى الله عليه وسلم : उस शम्स की नाक भाक आवूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुरदे पाक न पढे. (ترمذی)

तश्वीश नाक गुरबत तो आभिरत की गुरबत है और येही गुरबत दर उकीकत मुसीबत है जैसा कि उजरते सय्यिदुना अबू हुरैरा رضي الله تعالى عنه से मरवी है कि पैकरे अन्वार, तमाम नबियों के सरदार, मदीने के ताजदार صلى الله تعالى عليه وآله وسلم ने सहाबअे किराम عليهم الرضوان से ईस्तिफ़सार इरमाया : क्या तुम जानते हो मुफ़िलस कौन है ? सहाबअे किराम عليهم الرضوان ने अर्ज की : हम में मुफ़िलस (या'नी गरीब, भिस्कीन) वोह है जिस के पास न दिरहम हों और न ही कोई माल. तो ईशाद इरमाया : “मेरी उम्मत में मुफ़िलस वोह है जो कियामत के दिन नमाज, रोजा और जकात ले कर आयेगा लेकिन उस ने कुलां को गावी दी होगी, कुलां पर तोहमत लगाई होगी, कुलां का माल भाया होगा, कुलां का पून बहाया होगा और कुलां को मारा होगा. पस उस की नेकियों में से उन सब को उन का हिस्सा दे दिया जायेगा. अगर उस के जिम्मे आने वाले हुकूक के पूरा होने से पडले उस की नेकियां भत्म हो गईं तो लोगों के गुनाह उस पर डाल दिये जायेंगे, फिर उसे जहन्नम में ईंक दिया जायेगा.” (مسلم، كتاب البر والصلة، باب تحريم الظلم، ص ۱۳۹۴، حديث: ۲۵۸۱)

भीठे भीठे ईस्लामी त्माईयो ! उर जाओ ! लरज उठो ! उकीकत में मुफ़िलस वोह है जो नमाज, रोजा, उज, जकात व सदकात, सभावतों, इलाही कामों और बडी बडी नेकियों के बा वुजूद बरोजे कियामत भाली का भाली रह जाये ! कभी गावी दे कर, कभी तोहमत लगा कर, भिला ईजाजते शरई अंट उपट कर, बे ईज्जती कर के, जलील कर के, मारपीट कर, आरियतन (या'नी आरिजी तौर पर) ली हुई थीजें कस्दन न लौटा कर, कर्ज दबा कर और दिल् दुभा कर जिन को दुन्या में नाराज कर दिया होगा वोह उस की सारी नेकियां ले जायेंगे और नेकियां भत्म हो जाने की सूरत में उन के गुनाहों का भोज उस पर डाल कर वासिले जहन्नम कर दिया जायेगा.



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّيْتُ عَلَى النَّبِيِّ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइइ शरीफ न पड़े तो वोह लोगों में से कजूस तरीन शप्स हे. (مسند احمد)

ईलाही ! वासिता देता हूं में भीठे मदीने का
 बया दुन्या की आइत से, बया उकबा की आइत से

(वसाईले बप्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

تُؤَبُّوا إِلَى اللَّهِ اسْتَغْفِرُ اللَّه

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّد

❁ मुइलसी दूर करने का वजीइ ❁

भीठे भीठे ईस्वामी भाईयो ! आप ने आभिरत के गरीब और
 डकीकी मुइलस की बढ नसीबी और दुन्यवी गरीब व भिस्कीन की भुश
 नसीबी के मुतअदिलक ज्ञाना, डम में से डर अेक का येड जेइन् डोना
 याडिये कि दुन्या में अगर मालो दौलत की कमी वगैरा जैसी आजमाईश
 आ ज़ाये तो वोह सभ्र करते हुवे उसे बरदाशत करे और आभिरत की गुरबत
 से पनाड मांगे कि आभिरत का गरीब ही दूर डकीकत बढ नसीब है.

नीज येड भी जेइन् नशीन इरमा लीजिये कि ब कदरे किफायत
 माल कमाना, दूसरों के दस्ते नगर (मोडताज व डजत मन्द) न डोने,
 किसी पर भोज न बनने और बर सरे रोजगार डोने की तमन्ना करना
 भुरा नहीं. ईस तरड की तमन्ना लिये हुवे रोजी के लिये तगो दौ करना,
 औरादो वजाईफ पढना सालिहीन का तरीका है जैसा कि डजरते सय्यिदुना
 ईबने शीरवैड رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं कि अेक दिन **اَللّٰهُ**
 عَزَّ وَجَلَّ
 عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي मा'रुइ कर्पी
 की भिदमते बा बरकत में अेक तंगदस्त व मुइलस शप्स ने अपनी
 गुरबत की शिकायत की. आप رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ ने इरमाया : “**اَللّٰهُ**



इरमाने मुस्ताफ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : जो मुज पर दस मरतबा दुरदे पाक पढे **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उस पर सो रडमतें नाजिल करमाता है. (ज़रान)

तआला तुजे अपने डिङ्गो अमान में रभे, अडलो धयाल की तरङ्ग लौट जा और येड अङ्काज विदे जभां रभ : “**مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ** (अल्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** ने जो याडा वोडी हुवा).”

वोड शप्स येड विदे करता हुवा घर की तरङ्ग जा डी रडा था कि रास्ते में उस की मुलाकात अेक अन्जान शप्स से हुई जिस ने उस को अेक थैली पकडाई और यवा गया. गरीब शप्स ने जब थैली षोली तो डीनारों से ढरी हुई थी, वोड बडुत षुश हुवा और वडीं से वापस पलट कर डडरते सय्यिदुना मा'रुङ्ग कर्षी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِي** की षिदमत में डजिर डो गया ताकि ईस पेश आने वाले वाकिअे की रुदाद बताअे.

आप **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰی** ने उस शप्स को देभते डी इरमाया : “अै **अल्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** के बन्दे ! जब तेरी डजत पूरी डो गई थी तो वापस क्युं आया ? **अल्लाह** रडमान **عَزَّ وَجَلَّ** तुजे अपने डिङ्गो अमान में रभे, अडलो धयाल की तरङ्ग येड कडते हुवे लौट जा : “**مَا شَاءَ اللّٰهُ كَانَ**” (عیون الحکایات، ص ۲۷۸)

अल्लाह रडभुल धजूळत **عَزَّ وَجَلَّ** की उन पर रडमत डो और उन के सडके डमारी बे डिसाब मङ्गिरत डो.

اٰميين بجاہ النّبیّ الاميين صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ

क्यूंकर न मेरे काम बनें गैब से डसन

बन्दा भी डूं तो कैसे बडे कारसाज क

(जौके ना'त)

صَلُّوْا عَلٰی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد



रोडी में डरकत का डेहतरिन गुरषा



डडरते सय्यिदुना सडूल षिन सा'द सा'ईई **عَنْهُ** اللّٰهُ تَعَالٰی **رَضِيَ** बयान करते डैं कि अेक शप्स ने हुजूरे अकदस, शङ्गीअे रोजे मडशर **صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ** की षिदमते बा डरकत में डजिर डो कर अपनी

पेशकश : मजबिसे अब मदीनतुल धल्मिय्या (दा'वते धस्वामी)

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जो लोग अपनी मजबिस से **अल्लाह** के जिक्र और नबी पर दुरुद शरीफ़ पढे बिगैर उक गये तो वोड बद्रबूदार मुदरि से उठे. (شعب الایمان)

गुरबत और तंगदस्ती की शिकायत की. नबिय्ये करीम صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّمَ ने ईशादि फ़रमाया : जब तुम अपने घर में दाखिल हो तो सलाम करो अगर्थे कोई भी न हो, फिर मुज पर सलाम भेजो और अेक बार **قُلْ هُوَ اللهُ** शरीफ़ पढो. उस शप्स ने अैसा ही किया तो **अल्लाह** तआला ने उसे ईतना मालदार कर दिया कि उस ने अपने उमसायों और रिशतेदारों में भी तकसीम करना शुरुअ कर दिया.

(القول البديع، الباب الثاني في ثواب الصلاة على رسول الله الخ، ص 273)

❁ तंगदस्ती का र्दलाज ❁

मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 419 सफ़हात पर मुशतमिल किताब “मदनी पंजसूरड” सफ़हा 246 पर है : “**يَا مَلِكُ**” 90 बार जो गरीब व नादार रोजाना पढा करे **إِنْ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ** गुरबत से नजात पाअेगा. (मदनी पंजसूरड, स. 246)

तू है मो'ती वोड हें कासिम येड करम है तेरा
तेरे मडबूब के टुकडों पे पखूंगा या रब

(वसाईले बप्शिश)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ

❁ रिज्क में भरकत का वअीफ़ा ❁

दा'वते ईस्वामी के ईशाअती ईदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ किताब “मदफ़्ज़ाते आ'ला उररत” के सफ़हा 128 पर है : अेक सहाबी (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ) भिदमते अकदस (صَلَّي اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالِهِ وَسَلَّمَ) में लाजिर हुवे और अर्ज़ की : दुन्या ने मुज से पीठ फेर ली. फ़रमाया : क्या वोड तस्बीह तुम्हें याद नहीं जो तस्बीह है मलाअेका की और जिस की

पेशकश : मजबिसे अल मदीनतुल ईल्मिया (दा'वते ईस्वामी)



इरामाने मुस्ताफ़ा صلی اللہ تعالیٰ علیہ و آلہ وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुरुदे पाक न पढा तहकीक वोह बढ भज्त हो गया. (उंदा)

बरकत से रोजी दी जाती है. पहले दुन्या आयेगी तेरे पास जलीलो प्वार हो कर, तुलूमे इश के साथ सो बार कडा कर “سُبْحَانَ اللَّهِ وَبِحَمْدِهِ سُبْحَانَ اللَّهِ الْعَظِيمِ وَبِحَمْدِهِ اسْتَقْفِرُ اللَّهَ” उन सडाभी رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ को सात दिन गुजरे थे कि भिदमते अकदस में डालिर हो कर अर्ज की : “छुजूर ! दुन्या मेरे पास इस कसरत से आई, मैं हैरान हूँ कहां उठाऊँ कहां रफूँ !”

(لسان الميزان، حرف العين، ٣٠٤/٤، حديث: ٥١٠٠، زرقانی علی المواهب،

ذکر طبه صلی اللہ علیہ وسلم من داه الفقیر، ٤٢٨/٩ واللفظ له)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! अशुओं की सोडभतें और नेकों की दुआओं जडूर अपना रंग दिजाती हैं. आझातो बलिय्यात और मुशिकलात में **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के बरगुजीदा बन्दों से मदद तलब करने से बलाओं तलती और मुशिकलें काहूर होती हैं..

नीज कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते ईस्लामी के मदनी माडोल से वाबस्ता होने और आशिकाने रसूल के साथ मदनी काइलों में सफर करने की बरकत से भी डालात बर आने, मुशिकलात डल होने और मसाईब दूर होने के बे शुमार वाकिआत मिलते हैं, जैसा कि दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ **1548** सफ़हात पर मुशतमिल किताब “इंजाने सुन्नत” जिहद अव्वल सफ़हा **980** पर है :

❦ मदनी बहार : K.E.S.C में नोकरा मिल गर्ध ❦

ओरंगी टाउन (बाबुल मदीना करायी) के अेक जिम्मादार ईस्लामी भाई ने अपने मदनी माडोल में आने और सिद्विसलअे रोजगार पाने का वाकिआ कुछ यूँ बयान इरमाया : **19.6.2003** को अेक ईस्लामी



दरमाने मुस्ताफा : صَلَّاتُكَ عَلَيَّ وَبِعَلِّمُ : जिस ने मुझ पर रोझे जुमुआ दो सो बार दुरदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (جمع الجوامع)

भाई के दा'वत देने पर दा'वते ईस्लामी के इफ़तावार सुन्नतों भरे ईजतिमाअ की तरफ़ रुख़ हुवा मगर पाबन्दी नहीं थी. बे रोजगारी के सबब परेशानी थी, अेक ईस्लामी भाई की ईन्फ़िरादी कोशिश के नतीजे में मदनी काफ़िला कोर्स के लिये दा'वते ईस्लामी के आलमी मर्कज़ इँजाने मदीना में दाख़िला ले लिया. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ आशिकाने रसूल की सोहबतों और बरकतों ने मुझ गुनहगार पर मदनी रंग यढा दिया, और ख़ने का ढंग सिखा दिया. मदनी काफ़िला कोर्स पूरा करने के दूसरे या तीसरे दिन भा'ऊ दोस्तों ने बताया कि K.E.S.C को मुलाजिमों की ज़रूरत है, हम ने भी दरप्वास्तें जम्अ करवा दी हैं आप भी करवा दीजिये. मैं ने अर्ज की, आज कल सिर्फ़ दरप्वास्तों पर कहां ! सिफ़ारिशों (बल्कि रिश्वतों) पर नोक़रियों की तरकीब बनती है ! अपने पास तो कुछ भी नहीं. बिल आबिर उन के ईसरार पर मैं ने "दरप्वास्त" जम्अ करवा दी. ईब्तिदाअन तहरीरी टेस्ट हुवे फ़िर ईन्टरव्यू के भा'द मेडीकल टेस्ट की सूरत बनी. बे शुमार असरो रुसूख़ वाली दरप्वास्तों के बा वुजूद मैं वाइद ऐसा था कि हर जगह काम्याब रहा ! फ़ाईनल ईन्टरव्यू में घर वालों ने जोर दिया कि पेन्ट शर्ट पहन कर जाओ मगर मैं तो आशिकाने रसूल की सोहबत की बरकत से ईंग्रेज़ी लिबास तर्क कर युका था लिहाज़ा सर्फ़ेद शलवार कमीस में ही पहुंच गया. अइसर ने मेरा मज़हबी हुल्या देष कर मुझ से भा'ऊ ईस्लामी मा'लूमात के सुवालात किये. जिन के मैं ने ब आसानी जवाबात दे दिये क्यूं कि اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं ने येह सब मदनी काफ़िला कोर्स के अन्दर सीखे हुवे थे. اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ बिगैर



इरमाने मुस्ताफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर सुब्ह व शाम दस दस बार दुरुदे पाक पढा उसे डियामत के दिन मेरी शक्राअत मिलेगी. (रु. १/१)

किसी सिफ़ारिश व रिश्वत के मुझे मुला-जमत मिल गई. हमारे घर वाले दा'वते ईस्लामी के मदनी काइला कोर्स और मदनी माडोल की भरकत टेप कर दंग रह गये और اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ दा'वते ईस्लामी के मुहिब बन गये. येह बयान देते वक्त اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَزَّوَجَلَّ मैं दा'वते ईस्लामी की अलाकाई मुशावरत के पादिम (निगरान) की हैसियत से अपने अलाके में सुन्नतों के डंके बजा रहा हूँ और मदनी ईन्आमात व मदनी काइलों की धूमें मया रहा हूँ.

नोकरी याडिये, आर्धये आर्धये काइले में यलें, काइले में यलो
तंगदस्ती भिटे, दूर आइत डटे लेने को भरकतें, काइले में यलो

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! बयान को ईज्जिताम की तरफ़ लाते हुवे सुन्नत की इजीवत और रन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआदत हासिल करता हूँ. ताजदारे रिसालत, शहनशाडे नुबुव्वत म्शक़ात अल्लुहा त्वाली एलैह वसल्लम का इरमाने जन्नत निशान है : “जिस ने मेरी सुन्नत से महब्बत की उस ने मुझ से महब्बत की और जिस ने मुझ से महब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा.”

(مشكاة التصانيع، كتاب الايمان، باب الاعتصام بالكتاب الخ، الفصل الثاني، ٥٥/١، حديث: ١٧٥)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आका

जन्नत में पडोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٌ



इरमाने मुस्ताफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : मुज पर कसरत से दुरदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज पर दुरदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मजिहरत है. (ابن عساکر)



“मदनी हुत्या अपनाओ” के यौदह हुइइ की निरखत से लिबास के 14 मदनी इल

तीन इरामीने मुस्तफा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हों : ❀ जिन्न की आंभों और लोगों के सित्र के दरमियान पर्दा येह है कि जब कोई कपडे उतारे तो **بِسْمِ اللّٰهِ** कल ले (२००६: ०९/२०: ०९) मुफ्रिसरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुफ्रती अहमद यार पान **عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْاٰنْحٰن** इरमाते हैं : जैसे दीवार और पर्दे लोगों की निगाह के लिये आउ बनते हैं जैसे ही येह **اَللّٰهُ** **عَزَّ وَجَلَّ** का जिक्र जिन्नात की निगाहों से आउ बनेगा कि जिन्नात इस (या'नी शर्मगाह) को देख न सकेंगे (मिरआत, जि. 1, स. 268) ❀ जो शप्स कपडा पहने और येह पढे : **اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ كَسَانِیْ هٰذَا وَرَزَقَنِیْهِ مِنْ غَیْرِ حَوْلٍ مِّمَّنِیْ وَلَا قُوَّةَ ۙ** (شُعَبُ الْاِیْمَانِ، 181/5: 1280) उस के अगले पिछले गुनाह मुआइ हो जायेंगे ❀ जो बा वुजूदे कुदरत जैबो जीनत का लिबास पहनना तवाजोअ (या'नी आजिजी) के तौर पर छोड दे, **اَللّٰهُ** **عَزَّ وَجَلَّ** उस को करामत का हुल्ला पहनायेगा ❀ भातमुल मुर्सलीन, रहमतुदिलल आलमीन **صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم** का मुबारक लिबास अकसर सईद कपडे का हो ता ❀ लिबास (كَشْفُ الْاِیْتِسَابِ فِی اسْتِحْبَابِ الْاِبْسَابِ لِلشَّيْخِ عَبْدِالْحَقِّ التَّلْمُوْی ص 36) उलाल कमाई से हो और जो लिबास हराम कमाई से हासिल हुवा हो,

1 : तर्जमा : तमाम ता'रीफें **اَللّٰهُ** **عَزَّ وَجَلَّ** के लिये जिस ने मुजे येह कपडा पहनाया और मेरी ताकत व कुवत के बिगैर मुजे अता किया .





इरमा ने मुस्ताइ عَلَيْهِ السَّلَامُ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीक पड़ेगा में क्रियामत के दिन उस की शकाअत कइंगा. جمع الجوامع

उस में इर्ज व नफ़ल कोई नमाज कबूल नहीं होती (أَيْضاً ص ६१) ❀ **मन्कूल** है : जिस ने बैठ कर इमामा बांधा, या ञडे डो कर सरावील (या'नी पाजमा या शलवार) पहनी तो **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ उसे जैसे मरज में मुभ्तला इरमाअेगा जिस की दवा नहीं (أَيْضاً ص ३१) ❀ पहनते वक्त सीधी तरफ़ से शुइअ कीजिये (कि सुन्नत है) मसलन जब कुरता पहनें तो पहले सीधी आस्तीन में सीधा हाथ दाखिल कीजिये फिर उलटा हाथ उलटी आस्तीन में (أَيْضاً ص ६३) ❀ इसी तरह पाजमा पहनने में पहले सीधे पाईये में सीधा पाई दाखिल कीजिये और जब (कुरता या पाजमा) उतारने लगे तो इस के बर अक्स (उलट) कीजिये या'नी उलटी तरफ़ से शुइअ कीजिये ❀ दा'वते इस्लामी के इशाअती इंदारे **मक्तबतुल मदीना** की मत्बूआ 1197 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” जिल्द 3 सफ़हा 409 पर है : सुन्नत येह है कि दामन की लम्बाई आधी पिंडली तक डो और आस्तीन की लम्बाई ज़ियादा से ज़ियादा उंग्लियों के पोरों तक और यौडाई अेक बालिशत डो (رَدُّ الْمُنْتَهَى، १/१११) ❀ सुन्नत येह है कि मर्द का तहबन्द या पाजमा टप्ने से ऒपर रहे (मिरआत, जि. 6, स. 94) ❀ मर्द मर्दाना और औरत ज़नाना ही लिबास पहने. छोटे बच्चों और बच्चियों में भी इस बात का खिल्लाउ रभिये ❀ दा'वते इस्लामी के इशाअती इंदारे मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ 1250 सफ़हात पर मुश्तमिल किताब, “बहारे शरीअत” जिल्द अव्वल सफ़हा 481 पर है : मर्द के लिये नाफ़ के नीचे से घुटनों के नीचे तक “औरत” है, या'नी इस का छुपाना इर्ज है. नाफ़ इस में दाखिल नहीं और घुटने दाखिल हैं.



इरमाने मुस्ताफा صلى الله عليه وآله وسلم: जिस ने किताब में मुज पर दुरुहे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा किरिशते उस के बिये ईस्तिग्दर (या'नी बग्शिश की दुआ) करते रहेंगे. (अ. १)

(**دُرْمُخْتَار، رَدُّ النَّحْتَار، १३/२**) ईस जमाने में बहुतेरे जैसे हैं कि तहबन्द या पाजामा ईस तरह पहनते हैं कि पेडू (या'नी नाफ़ के नीचे) का कुछ छिस्सा भुला रहता है, अगर कुरते वगैरा से ईस तरह छुपा हो कि जिल्द (या'नी भाल) की रंगत न यमके तो भैर, वरना **हराम** है और नमाज में चौथाई की भिक्दार भुला रखा तो नमाज न होगी (बहारे शरीअत) भुसूसन ७४ व उम्रे के अहराम वाले को ईस में सप्त अहतियात की ज़रूरत है  आज कल बा'ज लोग सरे आम लोगों के सामने नीकर (डाफ़ पेन्ट) पहने फिरते हैं जिस से उन के घुटने और रानें नज़र आती हैं येह **हराम** है, जैसे के भुले घुटनों और रानों की तरफ़ नज़र करना भी **हराम** है. बिल भुसूस भेलकूह के मैदान, वरजिश करने के मकामात और साहिले समुन्दर पर ईस तरह के मनाज़िर जियादा होते हैं. लिहाज़ा जैसे मकामात पर जाने में सप्त अहतियात ज़रूरी है  **तकब्बुर** के तौर पर जो लिबास हो वोह मन्मूअ है. **तकब्बुर** है या नहीं ईस की शनाप्त यूं करे कि एन कपड़ों के पहनने से पहले अपनी जो डालत पाता था अगर पहनने के बा'द भी वोही डालत है तो मा'लूम हुवा कि एन कपड़ों से **तकब्बुर** पैदा नहीं हुवा. अगर वोह डालत अब बाकी नहीं रही तो **तकब्बुर** आ गया. लिहाज़ा जैसे कपडे से बये कि **तकब्बुर** बहुत भुरी सिफ़त है.

(बहारे शरीअत, जि. 3, स. 409, ०११/१, **رَدُّ النَّحْتَار، 163** मदनी इल, स. 20)

मदनी हुल्ला

दाढी, जुल्फें, सर पर सज्ज सज्ज ईमामा शरीफ़ (सज्ज रंग गहरा या'नी डार्क न हो) कली वाला सर्फ़े कुरता सुन्नत के मुताबिक



इरमा ने मुस्ताफा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझे पर दुर्रत पाक न पढा
 (उस ने जन्नत का रास्ता छोड दिया. (ज़ुर्न))

आधी पिंडली तक लम्बा, आस्तीनें अेक बालिशत यौडी, सीने पर
 दिल् की ज़ानिब वाली जेब में नुमायां भिस्वाक, पाजामा या शलवार
 टप्नों से ऒपर. (सर पर सफ़ेद यादर और पर्दे में पर्दा करने के लिये
 मदनी ईन्आमात पर अमल करते हुवे कथ्थई यादर ल्मी साथ रहे तो
 मदीना मदीना)

दुआअे अतार : या **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ ! मुजे और मदनी हुल्ये में रहने
 वाले तमाम ईस्लामी भाईयो को सल्ल सल्ल गुम्बद के साअे में शहादत,
 जन्नतुल बकीअ में मदइन और जन्नतुल फिरदौस में अपने प्यारे
 महुबूअ व صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का पडोस नसीब इरमा. या **अल्लाह** !
 सारी उम्मत की मग़ि़रत इरमा. اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

उन का दीवाना ईमामा और जुल्फो रीश में

लग रहा है मदनी हुल्ये में वोड कितना शानदार

सुन्नते सीपने के लिये मक्तबतुल मदीना की मत्बूआ दौ² कुतुअ

(1) 312 सफ़हात पर मुश्तभिल किताब “बडारे शरीअत” हिरसा 16
 और (2) 120 सफ़हात की किताब “सुन्नते और आदाअ” हदिय्यतन
 हासिल कीजिये और पढिये. सुन्नतो की तरबिय्यत का अेक बेहतरीन
 जरीआ दा'वते ईस्लामी के मदनी काइलॉ में आशिकाने रसूल के साथ
 सुन्नतो ल्मरा सइर ल्मी है.

लूटने रहमते काइले में यलो सीपने सुन्नते काइले में यलो

डोंगी डल मुश्किलें काइले में यलो अत्म डों शामते काइले में यलो

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّد

इस्लामो मुस्ताफा : ملینڈالمنیہ میں مسلم : جو मुझ पर एक दिन में 50 बार दुरुदे पाक पढे कियामत के दिन में उस से मुसा-कहा कर् (यानी छात्र मिला(ग)गा. (ابن بشكوال)

माخذुमراجع

مطبوعه	کتاب	نمبر شمار
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی	کنز الایمان فی ترجمۃ القرآن	1
دار المعنی، عرب شریف ۱۴۱۹ھ	صحیح مسلم	2
دار المعرفہ، بیروت ۱۴۱۴ھ	جامع ترمذی	3
دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۱ھ	سنن ابی داؤد	4
دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ	سنن ابن ماجہ	5
دار المعرفہ، بیروت ۱۴۱۸ھ	المستدرک علی الصحیحین	6
دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ	مسند احمد بن حنبل	7
دار الکتب العلمیہ بیروت ۱۴۲۱ھ	مشکاۃ المصابیح	8
مؤسسۃ الریان بیروت ۱۴۲۲ھ	القول البدیع	9
دار احیاء التراث العربی، بیروت ۱۴۲۲ھ	المعجم الاوسط	10
دار الکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ	شعب الایمان	11
دار الفکر، بیروت ۱۴۱۴ھ	مرقاۃ المفاتیح	12
دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ	ردالمحتار	13
دار المعرفہ، بیروت ۱۴۲۰ھ	الدرالمختار	14
دارالکتب العلمیہ، بیروت	مکاشفۃ القلوب	15
دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۱ھ	روض الریاحین	16
دارالکتاب العربی، بیروت ۱۴۱۳ھ	تلبیس ابلیس	17
دارالکتب العلمیہ، بیروت ۱۴۲۴ھ	عیون الحکایات	18
دار احیاء العلوم، باب المدینہ ۱۴۲۴ھ	کشف الالباس	19
نعمی کتب خانہ، گجرات	مراۃ المناجیح	20
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	بہار شریعت	21
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۳۳۰ھ	فضائل دعا	22
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۳۲۸ھ	فیضان سنت	23
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۳۲۹ھ	مدنی بیچ سورہ	24
شرکتہ قادریہ، بمبھورو، باب الاسلام سندھ 1980ء	معدن اخلاق	25
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۳۳۳ھ	حضرت سیدنا عمر بن عبدالعزیز کی	26
	425 حکایات	
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۳۳۳ھ	حدائق بخشش	27
ضیاء الدین پبلی کیشنز 1992ء	ذوق نعت	28
مکتبۃ المدینہ، باب المدینہ کراچی ۱۳۳۵ھ	وسائل بخشش مرثم	29

इरमाने मुस्ताफ़ा : **عمران ماستافا** : मुज़ पर दुइटे पाक की कसरत करो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुइटे पाक पढना तुम्हारे लिये पाकीज़गी का भाईस है. (ﷺ)

इहरिस्त

उनवान	सङ्हा	उनवान	सङ्हा
दुइटे पाक की इज़ीलत	1	दुआओ नबिय्ये रहमत और	
शेरे भुदा की कनाअत	2	मसाकीन से मलुब्बत	15
दिल को नर्म करने का नुस्खा	4	हुकरा से मलुब्बत कुर्बते ँलाडी	
गुरभत के इवाँईद	4	का सभल	16
गुरभा व हुकरा 500 साल पडले		उकीकी मुफ़िलस कौन ?	16
जन्नत में	6	मुफ़िलसी दूर करने का वज़ीफ़ा	18
गुरभत पर सभ्र	8	रोज़ी में भरकत का बेइतरीन नुस्खा	19
क्या मालदार गरीबों से अमल		तंगदस्ती का ँलाज	20
में सभकत रभते हैं ?	9	रिज़्क में भरकत का वज़ीफ़ा	20
गरीब व भिस्कीन भलीफ़ा	10	मदनी बहार : K.E.S.C. में नोकरी	
परेशान डाल की दुआ	12	भिल गँई	21
भिस्कीनों के लिये जन्नत	13	लिबास के 14 मदनी इूल	24
अकसर जन्नती गरीब होंगे	14	मदनी हुल्य़ा	26



इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّوْا عَلَيَّ وَعَلَىٰ آلِيَّ وَسَلَّمَ : बरोजे कियामत लोगों में से मेरे करीब तर वोह लोग जिस ने दुन्या में मुज पर जियादा दुरदे पाक पढे होंगे. ترمذی

❧ अयान करने की नियतें ❧

❧ उम्हो सलात और मदनी माडोल में पढाये जाने वाले दुरदे सलाम पढाओंगा
 ❧ दुरदे शरीफ़ की इजीलत बता कर صَلَّوْا عَلَيَّ وَعَلَىٰ آلِيَّ وَسَلَّمَ कडूंगा यूं मुद भी दुरदे पाक पढूंगा और दूसरों को भी पढाओंगा ❧ सुन्नी आलिम की किताब से पढ कर अयान कडूंगा ❧ पारह 14, सूरतनुहल, आयत 125 : اذْعُرُوا سَبِيْلَ رَبِّكُم بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ : 125
 ईमान : अपने रब की राह की तरफ़ बुलाओ पककी तदबीर और अख़ी नसीहत से) और बुभारी शरीफ़ (हदीस 4361) में वारिद ईस इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّوْا عَلَيَّ وَعَلَىٰ آلِيَّ وَسَلَّمَ : صَلَّى اللهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ يا'नी "पहुंया दो मेरी तरफ़ से अगर्थे ओक ही आयत हो" में दिये हुवे अहकाम की पैरवी कडूंगा ❧ नेकी का हुकम दूंगा और बुराई से मन्थ कडूंगा ❧ अश्आर पढते नीज अरबी, ईंग्रेजी और मुश्किल अल्फ़ाज बोलते वक्त हिल के ईफ़्वास पर तवज्जोह रभूंगा या'नी अपनी ईल्मियत की धाक बिडानी मकसूद हुई तो बोलने से बयूंगा ❧ मदनी काफ़िले, मदनी ईन्आमात, नीज अलाकाई दौरा बराये नेकी की दा'वत वगैरा की रब्बत हिलाओंगा. (सवाब बढाने के नुस्खे, स. 29)

❧ अयान सुनने की नियतें ❧

❧ मदनी येनल के नाजिरीन भी इन में से उरबे डाल नियतें कर सकते हैं) ❧ निगाहें नीथी किये भूब कान लगा कर अयान सुनूंगा ❧ टेक लगा कर बैठने के बज्राये ईल्मे दीन की ता'जीम की फ़ातिर जहां तक हो सका हो जानू बैदूंगा ❧ उरुरतन सिमट सरक कर दूसरे के लिये जगह कुशादा कडूंगा ❧ धक्का वगैरा लगा तो सभ्र कडूंगा, धूरने, जिडकने और उवलजने से बयूंगा ❧ صَلَّوْا عَلَيَّ وَعَلَىٰ آلِيَّ وَسَلَّمَ اذْعُرُوا سَبِيْلَ رَبِّكُم بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ : 125
 वगैरा सुन कर सवाब कमाने और सदा लगाने वालों की हिलजूई के लिये बुलन्द आवाज से जवाब दूंगा ❧ अयान के भा'द मुद आगे बढ कर सलाम व मुसाफ़हा और ईन्किरादी कोशिश कडूंगा. (सवाब बढाने के नुस्खे, स. 30)